Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

पंचतंत्र कथा साहित्य में नैतिक मूल्य

सिद्धार्थ सिंह कौरव
शोध छात्र (संस्कृत विभाग)
जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर (म.प्र.) भारत।

प्रो. (डा.) मनीष खैमरिया
विभागाध्यक्ष संस्कृत,
महारानी लक्ष्मीबाई शास.उत्कृष्ट
महाविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Article Info
Volume 3, Issue 6
Page Number: 65-67
Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 01 Dec 2020
Published : 15 Dec 2020

प्रस्तावना – ''सर्वोत प्रतिभा के धनी'' पं. विष्णु शर्मा का ग्रन्थ ''पंचतंत्र'' भारतीय इतिहास का एक ऐसा अनुपम, मनोरंजक, नीतिशास्त्र का ज्ञान प्रदान करने वाला ग्रन्थ है, जिसके अध्ययन मात्र से अल्पकाल में ही नीतिशास्त्र के सामाजिक, नैतिक एवं व्यवहारिक ज्ञान को अल्पबुद्धि प्राणी भी ग्रहण कर सकने में समर्थ हैं। इस ग्रन्थ का सुरूचिपूर्ण सरल भाव एवं भाषा का गुंजन मन–मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ने का कार्य करता है। इसमें वर्णित कथाओं में निहित आदेश व नीतिपूर्ण वाक्यों को कोई भी व्यक्ति स्वयं में आत्मसात कर बड़ी से बड़ी समस्याओं के समाधान निकालने में सक्षम हो सकता है।1

मुख्य शब्द – पंचतंत्र, कथा साहित्य, नैतिक मूल्य, पं. विष्णु शर्मा

पं. विष्णु शर्मा ने अपने ग्रन्थ ''पंचतंत्र'' के माध्यम से अनेक नैतिक कर्तव्यों व मूल्यों पर बल दिया है। यथा– छल प्रपंच से दूर रहना चाहिए, कपटपूर्ण व्यवहार नहीं करना चाहिए, मित्रता के कर्तव्य का पालन करना, अपनी बुद्धि विवेक का उपयोग करना, किसी पर अधिक विश्वास न करना और न ही अधिक अविश्वास करना, बिना सोचे समझे कार्य का दुष्परिणाम, लोभ न करना, स्वामी भक्त होना इत्यादि ऐसे अनेक तथ्यों का विवरण कथाकार ने अपनी कथाओं के माध्यम से दिया है। इस ग्रन्थ की रचना सरलता से नैतिक व्यवहार सीखने के निमित्त ही की गयी है। जिसे मानव अपने हृदय में आत्मसात कर किसी भी सामाजिक व नैतिक विचारों से अनभिज्ञ नहीं रहता है।

भावपूर्ण अभिव्यंजना के ज्ञाता आचार्य पं. विष्णु शर्मा ने अपने ग्रंथ ''पंचतंत्र'' को पॉच तंत्रों में विभक्त किया है। प्रत्येक तंत्र में वर्णित कथायें नैतिक पक्ष के आधार पर अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं शिक्षाप्रद है। इस ग्रन्थ का प्रथम तंत्र ''मित्रभेद'' है, जिसमें अनेक नैतिक बातों के विषय में बतलाया गया है। जिसका विवरण इस प्रकार है–

पं. विष्णु शर्मा ने वानर की कथा के माध्यम से स्पष्ट रूप से कहा कि मनुष्य को व्यर्थ के कार्यों से दूर रहना चाहिए अन्यथा वह उस कार्य के कारण विनष्ट हो जाता है जैसे वह वानर अपनी चपलता के कारण मारा गया था। मानव को दीन व्यक्तियों, संबंधियों और

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मनुष्यों पर सदैव दयाभाव रखना चाहिए। बिना पूछे व अनुचित स्थान पर नहीं बोलना चाहिए अन्यथा सम्मान की हानि होती है। बात वहॉ कहनी चाहिए जहॉ उसका लाभ हो। कहा भी गया है–

''वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्।
स्थायी भवति चात्यन्तं रागः शुक्लपटे यथा।।''[2]

कथा साहित्य के अनुपम रत्न कथाकार पं. विष्णु शर्मा ने अपने ग्रन्थ में आतिथ्य धर्म का शुद्ध एवं धर्ममय विवरण प्रस्तुत किया है। यथा– जो गृहस्थ घर आये हुए अतिथि का यथोचित पूजा (सम्मान) करते हैं वे देवतुल्य हो जाते हैं। धर्मशास्त्रों में भी कहा है, कि अतिथि का स्वागत सत्कार व कुशलक्षेम पूछने से ''अग्नि'', आसन देने से ''इन्द्र'', चरण धोने से ''पितृ'' और अर्घ्य देने से ''अतिथि'' को महादेव भी प्रसन्न होते हैं। जिस पुरूष के घर लम्बा रास्ता तय कर, श्रम से थके हुए और बलि वैश्वदेव कर्म की समाप्ति पर उपस्थित अतिथि का सत्कार होता है, वह श्रेष्ठ गति स्वर्ग प्राप्त करता है तथा जो संध्याकाल के समय घर आये अतिथि का स्वागत सत्कार नहीं करता, वह अतिथि उस गृहस्थ को अपना पाप देकर उसका पुण्य ले लेता है तथा उस पुरूष से देवता व पितर भी मुख फेरकर चले जाते हैं –

''अपूजितोऽतिथिर्यस्य गृहाद्याति विनिः श्रसन्।
गच्छन्ति विमुखास्तस्य पितृभिः सहदेवताः।।''[3]

राजा के नैतिक कर्तव्यों के विषय में कथाकार की अवधारणा है कि प्रजा पालन करना, राजाओं की कीर्ति और स्वर्गरूपी खजाने की वृद्धि करने वाला है। इसके विपरीत प्रजा को पीड़ा पहुॅचाना पाप और अपयश की वृद्धि करता है तथा धर्म का नाश भी होता है। अतः राजा को चाहिये कि गोपाल की भांति प्रजा रूपी गाय की उत्तम ढंग से पालन–पोषण करते हुए शनैः–शनैः उससे कर के रूप में धनरूपी दूध ग्रहण करे। उनके साथ सदैव प्रेममय व न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए तथा जो राजा अपने राज्य की प्रजा को बकरी के समान (कर वसूली से) मार डालता है, उसका लाभ उसे कुछ समय तक ही प्राप्त हो पाता है। जिस प्रकार एक माली फलदार वृक्षों के अंकुरों को भलीभांति देखरेख करके सींचता है, वैसे ही अच्छे राजा को दान–मान से अपनी प्रजा पालन करते हुए धर्मपूर्वक शासन करना चाहिए क्योंकि राजा को समस्त प्रकार के ऐश्वर्य प्रजा के द्वारा व स्वयं की बुद्धि व पराक्रम से ही प्राप्त होता है। यथा–

''यथा गौर्दुद्यते काले पाल्यते च तथा प्रजाः।
सिच्यते चीयते चैव लता पुष्पफलप्रदा।।
हिरण्यधान्यरत्नानि यानानि विविधानि च।
तथान्यदपि यत्किचिच्त्प्रजाभ्यः स्यान्मद्वीपतेः''।।[4]

आचार्य पं. विष्णु शर्मा ने सदैव सत्संगति को महत्व प्रदान किया है, क्योंकि जो मनुष्य जिस प्रकार के मनुष्य के संग अधिकांश समय व्यतीत करता है शनैः–शनैः वह मनुष्य दूसरे मनुष्य की भांति ही आचार एवं व्यवहार सीख जाता है। अतः मनुष्यों को सदैव सज्जनों की संगति ही करनी चाहिए। कहा भी गया है कि दुर्योधन की कुसंगति के प्रभाववश भीम जैसे सदाचारी पुरूष भी गौ चुराने जैसा घृणित कार्य किया था। अतः दुर्जन पुरूषों से सदैव दूर रहना ही श्रेयकर है। प्रायः संगति से पुरूष के अधम (नीच), मध्यम व उत्तमगुण आ जाते हैं–

''संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न ज्ञायते
मुक्तकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते।

स्वातौ सागरशुक्तिकुक्षिपतितं तज्जायते मौक्तिकं
प्रायेणाधममध्यमोतमगुणः संवासतो जायते''।।[5]

पं. विष्णु शर्मा के अनुसार बुद्धिबल, धैर्य एवं परिश्रम व्यक्ति का विशेष बल है। इसके विषय में वर्णन करते हुए उन्होंने स्पष्ट कहा है कि धनुर्धारी के धनुष से भले ही किसी की मृत्यु हो या न हो किन्तु बुद्धिमानों की बुद्धि से किया हुआ (छल–प्रपंच) कार्य राजा के साथ–साथ समस्त राज्य को नष्ट कर देता है। अर्थात् बुद्धि के द्वारा कुछ भी असाध्य नहीं होता है–

''न तच्छस्त्रैर्न नागेन्द्रेर्न ध्यैर्न पदातिभिः।
कार्यं संसद्धिमभ्येति यथा बुद्धया प्रसाधितम्।।''[6]

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. शिक्षा मनोविज्ञान – लेखक पी.डी. पाठक, प्रकाशन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. आधुनिक मनोविज्ञान के आधार।
3. पंचतंत्र व्याख्या गोकुलदास गुप्ता, प्रकाशन चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, प्रथम तंत्र श्लोक–34
4. पंचतंत्र व्याख्या गोकुलदास गुप्ता, प्रकाशन चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, चतुर्थ तंत्र श्लोक–5
5. पंचतंत्र व्याख्या गोकुलदास गुप्ता, प्रकाशन चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, प्रथम तंत्र श्लोक–245 व 247
6. पंचतंत्र व्याख्या गोकुलदास गुप्ता, प्रकाशन चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, प्रथम तंत्र श्लोक–27